Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

वनबेल्ट वन रोड परियोजना : भारत के विशेष सन्दर्भ में

श्रद्धा श्रीवास्तव
एसो0 प्रोफेसर,भूगोल पी0बी0पी0जी0 कालेज प्रतापगढ, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Volume 7, Issue 1

Page Number : 105-108

Publication Issue :

January-February-2024

Article History

Accepted : 25 Jan 2024

Published : 15 Feb 2024

शोधसारांश – भारत तथा चीन एशिया महाद्वीप में दो विकासशील तथा अधिक जनसंख्या तथा बढ़ती हुयी अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप महत्वपूर्ण हैं। यह दोनों देश विश्व की प्राचीन सभ्यता वाले स्थल रहे हैं। प्राचीन समय से तीर्थयात्रियों पर्यटन यात्री तथा व्यापारियों का आगमन चीन से भारत होता रहा है। भारत तथा चीन के मध्य तिब्बत भारत तथा चीन को भौगोलिक रूप से अलग करता था। 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण करके उसे स्वशासित क्षेत्र बना लिया उसके पश्चात् चीन तथा भारत पड़ोसी राष्ट्र बन गए।

मुख्य शब्द–वनबेल्ट, भारत, चीन, एशियामहाद्वीप, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, राष्ट्र।

आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व से भारत और चीन के मध्य आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। हॉन राजवंश के काल में स्थापित रेशम मार्ग भारत तथा चीन के मध्य प्रमुख व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता था तथा इसी से पूर्वी एशिया के देशों तक बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार भी हुआ था। चीन के ग्रंथों में भारत का वर्णन 130 ईसा पूर्व से 125 ईसा पूर्व के मध्य मिलता है। कौटिल्य के ग्रंथ अर्थशास्त्र में सिनापट्टा के रूप में रेशम मार्ग का उल्लेख मिलता है। प्राचीन रेशम मार्ग दो भाग मे विभाजित था। पहला भाग भूआधारित तथा दूसरा मार्ग समुद्र आधारित था।

प्राचीन रेशम मार्ग की भौगोलिक स्थिति :– प्राचीन रेशम मार्ग की कुल लम्बाई लगभग 6500 किलोमीटर थी जिसका प्रारम्भ चीन के मध्य पूर्व में स्थित चीन की प्राचीन राजधानी शिआन से हुआ था। यह मार्ग शिआन से मध्य एशिया, भूमध्य सागर से होते हुए यूरोप को जोड़ता था। इस मार्ग की कुछ शाखाएं अफ्रीका तक फैली हुयी थीं। शिआन से प्रारम्भ होकर यह मार्ग चीन की दीवार के समानान्तर चीन के उत्तर पश्चिम की ओर स्थित तकलामाकन मरूस्थल जिसके उत्तर में तियेयशान पर्वत तथा दक्षिण में कुनलुन पर्वत श्रृंखला को पार करते हुए पश्चिम में पामीर के पठार से होती हुयी इस्तांबुल तक फैला था। यह रेशम मार्ग की उत्तरी शाखा थी। इसकी दक्षिणी शाखा खारकन्द चीन से प्रारम्भ होकर काराकोरम दर्रे को पार करते हुए लेह तथा श्रीनगर से होते हुए उत्तर पश्चिम भारत तक फैली थी। भारत भौगोलिक रूप से रेशम मार्ग से जुडकर रेशम व्यापार का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महत्वपूर्ण भाग था। रेशम मार्ग ने चीन, भारत, मिश्र, ईरान, अरब तथा प्राचीन विश्व की सभ्यताओं के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। समय के साथ इस मार्ग ने भूराजनैतिक स्त्रातजिक तथा व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया जिस पर सभी राष्ट्रों द्वारा नियंत्रण की चेष्टा की गई।

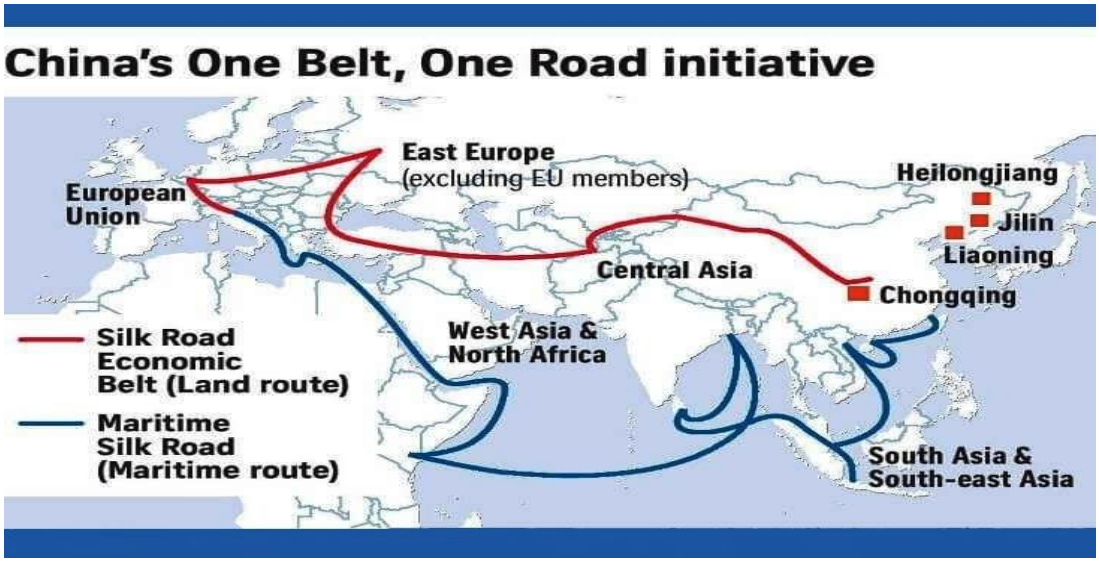

समुद्री रेशम मार्ग ऐतिहासिक रेशम मार्ग का खण्ड है जो चीन, दक्षिण पूर्वी एशिया, भारतीय उपमहाद्वीप, अरब प्रायद्वीप सोमालिया, मिश्र तथा यूरोप महाद्वीप को जोड़ता है। तुर्क मंगोल एवं एशियाई कबीलों के मध्य रेशम मार्ग पर नियंत्रण स्थापित करने तथा वर्चस्व की लडाई प्रारम्भ हुयी तो रेशम मार्ग का बहिष्कार किया गया जिससे मुख्य रेशम मार्ग लगभग 1453 ई0 तक स्वतः ही समाप्त हो गया। इसके विकल्प के रूप में समुद्री रेशम मार्ग से मसाले, सूती कपड़े, रेशम, हाथी दाँत, बहुमूल्य पत्थर आदि का व्यापार अरब, अफ्रीका तथा यूरोप तक होता रहा। यह मार्ग भारत में अरिकमेडु, कावेरी पट्टनम, सूरापारक आदि बन्दरगाह से जुड़ा था।

वन बेल्ट वन रोड परियोजना :– वन बेल्ट वन रोड परियोजना चीन के प्राचीन रेशम मार्ग से जुड़ा हुआ नया स्वरूप है जो चीन को भूमि एवं समुद्र मार्ग द्वारा यूरोप से जोड़ता है। इस योजना का प्रारम्भ शीजिनपिंग ने 2013 में किया। वन बेल्ट वन रोड (OBOR) के माध्यम से चीन भूराजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति करते हुए नयी अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को निर्धारित करना चाहता है चीन की इस परियोजना की पूर्णता पर चीन एशिया की सबसे बड़ी शक्ति के रूप में प्रतिस्थापित हो जाएगा। वन बेल्ट वन रोड़ दो अलग–अलग अवधारणा से मिलकर बना है जिसमें पहला वन बेल्ट है जो भूआधारित मार्ग है जिसे सिल्क रोड़ आर्थिक पट्टी कहते है जिसके अन्तर्गत सड़क मार्ग, रेल मार्ग, गैस पाइप लाइन और ऑप्टिकल व फाइबर केबल के माध्यम से चीन को यूरोप, मध्य पूर्व, मध्य एशिया और दक्षिण एशिया से जोड़ना है। दूसरा वन रोड़ एक मार्ग है जो समुद आधारित है जिसे 21 सदी का समुद्री रेशम मार्ग कहते हैं। इसके अन्तर्गत चीन को दक्षिण पूर्व एशिया , दक्षिण प्रशान्त, दक्षिण एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व और यूरोप को जोड़ना है।

वन बेल्ट वन रोड (OBOR) को 2016 में परिवर्तित करके बेल्ट एण्ड–रोड इनिशिएटिव (BRI) नाम दिया गया है जिसका लक्ष्य एशिया यूरोप और अफ्रीका को एक से अधिक भूमि एवं समुद्री मार्गों से जोड़ना है। इस परियोजना का उद्देश्य सम्मिलित देशों के मध्य व्यापार हेतु अवस्थापनात्मक विकास के लिए क्षेत्रों के मध्य जुड़ाव को बढ़ावा देना, निवेश एवं वित्तीय एकीकरण को बढ़ावा देना और सम्मिलित देशों के बीच सौहार्द्र पूर्ण सम्बन्ध को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही चीन द्वारा अल्प विकसित कमजोर देशों को विकास में सहयोग करने के साथ ही उनके आर्थिक संसाधनों का पूर्ण लाभ प्राप्त करना तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मध्य एशिया में अपने प्रभाव को स्थापित करना है। जिससे दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया की भूराजनीति में अमेरिका के वर्चस्व को संतुलित किया जा सके।

भारत पर प्रभाव :– भारत भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है। चीन की इस परियोजना की पूर्णता पर चीन दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी शक्ति के रूप में प्रतिस्थापित हो जाएगा। बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से चीन भारत के समीप स्थित छोटे देशों श्रीलंका, म्यांमार, फिलीपीस, पाकिस्तान, थाइलैण्ड, बंग्लादेश आदि में विकास के नाम पर अपनी उपस्थित को बढ़ा रहा है। जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में चीन का प्रभाव बढ़ रहा है। ओबोर (OBOR) के अन्तर्गत चीन के शिनजिंयाग प्रान्त से पाकिस्तान के ग्वादर तक चीन प्राक– इकोनोमिक कॉरिडोर बना रहा है, सीपीईसी पॉक अधिकृत कश्मीर (CPEC) से होकर गुजरेगा यह भारत की संम्प्रभुता का उलंघन है। गिलगित बाल्टिस्तान में निवेश के माध्यम से सेना को बढ़ाना एवं सैन्य अड्डा बनाना आदि सम्मिलित है। चीन हिन्द महासागर में भारत के सभी पड़ोसी देशों श्रीलंका बांग्लादेश , पाकिस्तान में निवेश कर रहा है तथा इस देशों में नौ सैनिक अड्डा बना रहा है जिसके माध्यम से भारत की सुरक्षा को खतरा है। जहाँ भारत की सीमा चीन से नहीं लगती है वहां बी आर आई के माध्यम से चीन सेना की उपस्थिति भारत की सुरक्षा के लिए चुनौती है।

वन बेलट वन रोड परियोजना के साथ–साथ चीन द्वारा चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) बनाने की योजना ने भारत के लिए समस्या को और अधिक जटिल कर दिया है। विशेषतः भारत के पड़ोसी राष्ट्र नेपाल, बंग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, पाकिस्तान, चीन के प्रभाव में है। भविष्य में चीन इन देशों में आर्थिक नियंत्रण के साथ–साथ वहां की राजनीति को भी प्रभावित करेगा। स्पष्ट है कि चीन इस परियोजना के माध्यम से भारत की सम्प्रभुता के लिए समस्या उत्पन्न कर रहा है बल्कि भारत के सभी पड़ोसी राष्ट्र को भी अपने प्रभाव में लेकर भारत को वैश्विक आधार पर अलग थलग करने का प्रयास कर रहा है। वन बेल्ट वन रोड परियोजना के माध्यम से चीन भूराजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति करते हुए नई अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को निर्धारित करना चाहता है। जिससे भारत पर इसका प्रतिकूल प्रभाव होगा। इसके लिए भारत को अपनी विदेश नीति को एवं विदेश में चल रही परियोजनाओं को स्वतंत्र रूप से विकसित करना चाहिए। जिससे भारत के वर्चस्व में वृद्धि हो सके एवं राष्ट्रीय सुरक्षा भी प्रभावित न हो। इसके लिए लुक ईस्ट लुक वेस्ट के साथ कनेक्टिंग मध्य एशिया जैसी नीतियां सहायक होंगी।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, सतीश चन्द्र', भारत चीन सीमा विवाद
2. कुमार सुकृत हिन्द महासागर में चीन, भारत मालदीप
3. पंत, पुष्पेश 21 वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध
4. मिश्राकेशव भारद्वाज, प्रवीण, बीसवीं सदी में भारत चीन सम्बन्ध
5. क्रानिकल
6. दृष्टि
7. आज तक